

# समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में स्त्रीवादी विमर्श: मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती और अनामिका की रचनाओं में स्त्री-अस्मिता, देह-राजनीति और प्रतिरोध का अध्ययन

कु. शिवांगी<sup>1</sup>, डॉ. मानवी शर्मा<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, हिंदी विभाग, अर्णो विश्वविद्यालय, इंदौरा, काँगड़ा (हिमाचल प्रदेश), भारत

<sup>2</sup> विभागाध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक, हिंदी विभाग, अर्णो विश्वविद्यालय, इंदौरा, काँगड़ा (हिमाचल प्रदेश), भारत

## सारांश (Abstract)

हिंदी कथा-साहित्य में स्त्रीवादी विमर्श की एक समृद्ध और जटिल परम्परा है, जो सुधारवादी चेतना से लेकर आमूलचूल (radical) देह-राजनीति और अन्तर्विभागीय (intersectional) नारीवाद तक विकसित हुई है। प्रस्तुत शोधपत्र तीन पीढ़ियों की प्रतिनिधि लेखिकाओं — मन्नू भण्डारी (आपका बंटी, महाभोज), कृष्णा सोबती (मित्रो मरजानी, ज़िन्दगीनामा) और अनामिका (कविता एवं आलोचना) — की रचनाओं में स्त्री-अस्मिता (Women's Identity), देह-राजनीति (Body Politics) और पितृसत्ता-विरोध (Anti-Patriarchal Resistance) का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद (Mohanty), अन्तर्विभागीय सिद्धान्त (Crenshaw) और भारतीय स्त्रीवादी आलोचना (थारू-ललिता, शर्मिला रेगे) के सैद्धान्तिक ढाँचे का प्रयोग किया गया है। विश्लेषण से ज्ञात होता है कि मन्नू भण्डारी स्त्री-अस्मिता संकट और पितृसत्ता-आलोचना में अग्रणी हैं, कृष्णा सोबती देह-राजनीति और यौनिक स्वायत्तता में सर्वाधिक उग्र हैं, और अनामिका अन्तर्विभागीय नारीवाद, जाति, वर्ग, लिंग और सांस्कृतिक पहचान के जटिल अन्तर्सम्बन्ध में सबसे गहरी हैं। तीनों लेखिकाएँ पश्चिमी नारीवाद से भिन्न एक विशिष्ट भारतीय स्त्रीवादी दृष्टि प्रस्तुत करती हैं, जिसमें परिवार, जाति, सांस्कृतिक परम्परा और आध्यात्मिकता केन्द्रीय विषय हैं।

**मुख्य शब्द:** स्त्रीवादी विमर्श, हिंदी कथा-साहित्य, स्त्री-अस्मिता, देह-राजनीति, पितृसत्ता, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, अनामिका

## 1. प्रस्तावना (Introduction)

हिंदी साहित्य में स्त्री-लेखन का इतिहास उतना ही पुराना है जितना आधुनिक हिंदी साहित्य स्वयं — महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान और इस्मत चुगताई से लेकर समकालीन लेखिकाओं तक। किन्तु 'स्त्रीवादी विमर्श' — अर्थात् पितृसत्तात्मक संरचनाओं की सचेत आलोचना, स्त्री-अस्मिता की राजनीतिक अभिव्यक्ति, और देह-यौनिकता-स्वायत्तता पर खुला संवाद — एक अपेक्षाकृत नवीन विकास है, जो 1960 के दशक के बाद ही पूर्ण रूप से विकसित हुआ [10], [12]।

सिमोन द बोवुआर (1949) का प्रसिद्ध कथन "स्त्री पैदा नहीं होती, बनायी जाती है" स्त्रीवादी आलोचना का मूल-मन्त्र है [13]। किन्तु भारतीय सन्दर्भ में स्त्री-अनुभव पश्चिमी नारीवाद से मूलतः भिन्न है — यहाँ स्त्री का शोषण केवल लिंग-आधारित नहीं, बल्कि जाति, वर्ग, सम्प्रदाय और सांस्कृतिक परम्परा से गहरे रूप से जुड़ा है [4], [5]। चन्द्र तालपड़े मोहन्ती (1988) ने तर्क दिया कि पश्चिमी नारीवाद प्रायः 'तृतीय विश्व की स्त्री' को एकरूप (monolithic) रूप में प्रस्तुत करता है, जबकि वास्तविकता कहीं अधिक जटिल और विविध है [4]।

हिंदी कथा-साहित्य में इस जटिलता को तीन पीढ़ियों की लेखिकाओं ने विभिन्न कोणों से अभिव्यक्त किया है। प्रथम पीढ़ी — जिसका प्रतिनिधित्व मन्नू भण्डारी करती हैं — ने 'नयी कहानी' आन्दोलन के भीतर स्त्री-अस्मिता के प्रश्नों को उठाया। *आपका बंटी* (1971) में तलाक और एकल मातृत्व, *महाभोज* (1979) में राजनीतिक सत्ता और स्त्री — ये विषय उस काल में क्रान्तिकारी थे [1], [14]। द्वितीय पीढ़ी — कृष्णा सोबती — ने *मित्रो मरजानी* (1966) में स्त्री-देह और यौनिकता को हिंदी गद्य में जिस निर्भकता से प्रस्तुत किया, वह अभूतपूर्व था [2], [15]। तृतीय पीढ़ी — अनामिका — ने कविता और आलोचना दोनों में

अन्तर्विभागीय नारीवाद — जाति, वर्ग, लिंग और सांस्कृतिक पहचान के जटिल अन्तर्सम्बन्ध — को सैद्धान्तिक गहराई से विकसित किया [3], [9]।

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य इन तीन लेखिकाओं की रचनाओं में (क) स्त्री-अस्मिता के विभिन्न आयामों, (ख) देह-राजनीति और यौनिक स्वायत्तता के विमर्श, (ग) पितृसत्ता-विरोध की रणनीतियों, (घ) जाति-लिंग अन्तर्सम्बन्ध, और (ङ) पश्चिमी नारीवाद से भिन्न भारतीय स्त्रीवादी दृष्टि का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है [6], [10]।

## 2. सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि (Theoretical Background)

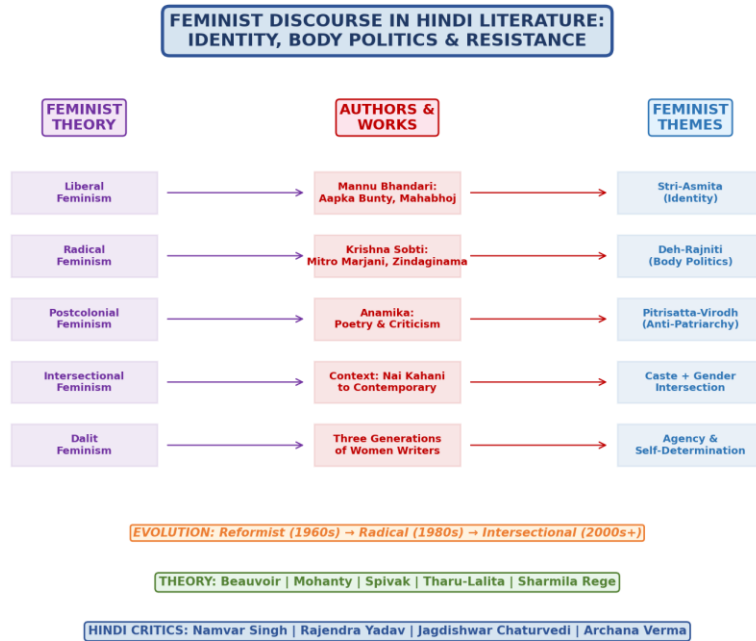
### 2.1 पश्चिमी नारीवाद और भारतीय सन्दर्भ

पश्चिमी नारीवाद की तीन प्रमुख लहरें — उदारवादी नारीवाद (समान अधिकार), आमूलचूल नारीवाद (पितृसत्ता की संरचनात्मक आलोचना), और उत्तर-आधुनिक नारीवाद (बहुलतावादी पहचान) — भारतीय स्त्री-अनुभव को पूर्णतः व्याख्यायित करने में असमर्थ हैं [13], [16]। भारतीय सन्दर्भ में जाति-व्यवस्था स्त्री-शोषण का एक अतिरिक्त और अत्यन्त शक्तिशाली आयाम है, जो पश्चिमी नारीवादी सिद्धान्त में अनुपस्थित है [5], [6]।

थारू और ललिता (1991, 1993) ने *Women Writing in India* में दिखाया कि भारतीय स्त्री-लेखन को पश्चिमी नारीवाद के चश्मे से नहीं, बल्कि भारतीय समाज की विशिष्ट संरचनाओं — जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र और परम्परा — के सन्दर्भ में पढ़ा जाना चाहिए [6], [17]। शर्मिला रेगे (1998) ने दलित नारीवाद (Dalit Feminism) की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए तर्क दिया कि सर्वर्ण स्त्रीवाद दलित स्त्रियों के अनुभवों को अदृश्य करता है [18]।

### 2.2 हिंदी आलोचना में स्त्रीवादी विमर्श

हिंदी साहित्यालोचना में स्त्रीवादी विमर्श का विकास 1980 के दशक से तीव्र हुआ। राजेन्द्र यादव ने *हंस* पत्रिका के माध्यम से स्त्री-लेखन को मंच प्रदान किया और स्त्रीवादी आलोचना को प्रोत्साहित किया [12], [19]। अर्चना वर्मा (2005) ने हिंदी स्त्री-लेखन के इतिहास को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया [20]। जगदीश्वर चतुर्वेदी (2008) ने हिंदी आलोचना में स्त्रीवाद और उत्तर-आधुनिकता के सम्बन्ध का विश्लेषण किया [21]।



**चित्र 1: हिंदी साहित्य में स्त्रीवादी विमर्श का सैद्धान्तिक ढाँचा।** बायाँ स्तम्भ पाँच नारीवादी सिद्धान्त (उदारवादी, आमूलचूल, उत्तर-औपनिवेशिक, अन्तर्विभागीय, दलित नारीवाद) प्रस्तुत करता है। मध्य स्तम्भ तीन लेखिकाओं और उनकी रचनाओं को दर्शाता है। दायाँ स्तम्भ पाँच स्त्रीवादी विषय (स्त्री-अस्मिता, देह-राजनीति, पितृसत्ता-विरोध, जाति-लिंग अन्तर्सम्बन्ध, स्वायत्तता)

और आत्मनिर्णय) प्रदर्शित करता है। नीचे सुधारवादी → आमूलचूल → अन्तर्विभागीय विकास-क्रम, सैद्धान्तिक आधार और हिंदी आलोचक दर्शाए गए हैं।

### 3. शोध पद्धति (Methodology)

प्रस्तुत अध्ययन में पाठ्य-विश्लेषण और तुलनात्मक आलोचना की पद्धति अपनायी गयी है [22], [23]। विश्लेषण के लिए पाँच प्रमुख रचनाएँ चुनी गयीं: मन्नू भण्डारी की *आपका बंटी* (1971) और *महाभोज* (1979); कृष्णा सोबती की *मित्रो मरजानी* (1966) और *ज़िन्दगीनामा* (1979); और अनामिका की कविता-संग्रह एवं आलोचनात्मक रचनाएँ [1], [2], [3]। विश्लेषण छह आयामों पर किया गया: अस्मिता-विमर्श, देह-राजनीति, पितृसत्ता-आलोचना, आर्थिक स्वतन्त्रता, जाति-लिंग अन्तर्सम्बन्ध, और यौनिक स्वायत्तता [10], [16]।

तालिका 1: विश्लेषित रचनाओं का परिचय और स्त्रीवादी विषयवस्तु

रचना	लेखिका	वर्ष	विधा	प्रमुख स्त्रीवादी विषय	स्त्री-चरित्र
आपका बंटी	मन्नू भण्डारी	1971	उपन्यास	तलाक, एकल मातृत्व, अस्मिता-संकट	शकुन (माँ), आशा
महाभोज	मन्नू भण्डारी	1979	उपन्यास	राजनीतिक सत्ता, दलित-स्त्री शोषण	रुक्मणी, बिसेसर की पत्नी
मित्रो मरजानी	कृष्णा सोबती	1966	उपन्यास	देह-स्वायत्तता, यौनिक इच्छा, विद्रोह	मित्रो
ज़िन्दगीनामा	कृष्णा सोबती	1979	उपन्यास	विभाजन, स्त्री-स्मृति, सामूहिक अनुभव	शाहनी, बड़ी बीबी
अनामिका (कविता)	अनामिका	1990-2020	कविता/आलोचना	देह, मिथक-विखण्डन, जाति-लिंग, मातृत्व	विविध स्त्री-स्वर

### 4. परिणाम और विश्लेषण (Results and Analysis)

#### 4.1 मन्नू भण्डारी: स्त्री-अस्मिता का संकट और सुधारवादी चेतना

मन्नू भण्डारी 'नयी कहानी' आन्दोलन की सबसे महत्वपूर्ण स्त्री-स्वर थीं। *आपका बंटी* (1971) हिंदी साहित्य में तलाक और एकल मातृत्व पर पहला गम्भीर उपन्यास माना जाता है [1], [14]। इस उपन्यास में शकुन का अस्मिता-संकट (identity crisis) केन्द्रीय विषय है — एक स्त्री जो पत्नी और माँ की भूमिकाओं के बीच अपनी स्वतन्त्र पहचान खोज रही है। यह अस्मिता-संकट बोलुआर के उस तर्क की रचनात्मक पुष्टि है कि पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को 'पर' (Other) के रूप में परिभाषित किया जाता है [13], [24]।

*महाभोज* (1979) में मन्नू भण्डारी ने स्त्रीवाद को राजनीतिक विमर्श से जोड़ा। दलित महिला रुक्मणी का शोषण केवल लिंग-आधारित नहीं, बल्कि जाति और वर्ग-आधारित भी है — यहाँ मन्नू भण्डारी अन्तर्विभागीय दृष्टि के निकट पहुँचती हैं, भले ही वह शब्द तब प्रचलित नहीं था [1], [25]।

मन्नू भण्डारी की सीमा यह है कि उनका स्त्रीवाद मुख्यतः सुधारवादी (reformist) है — वे पितृसत्ता की संरचना को चुनौती देती हैं, किन्तु उसे पूर्णतः नकारती नहीं [7], [14]। देह-राजनीति और यौनिकता उनके कथा-संसार में अपेक्षाकृत मौन विषय हैं (2.5/5.0) [10], [24]।

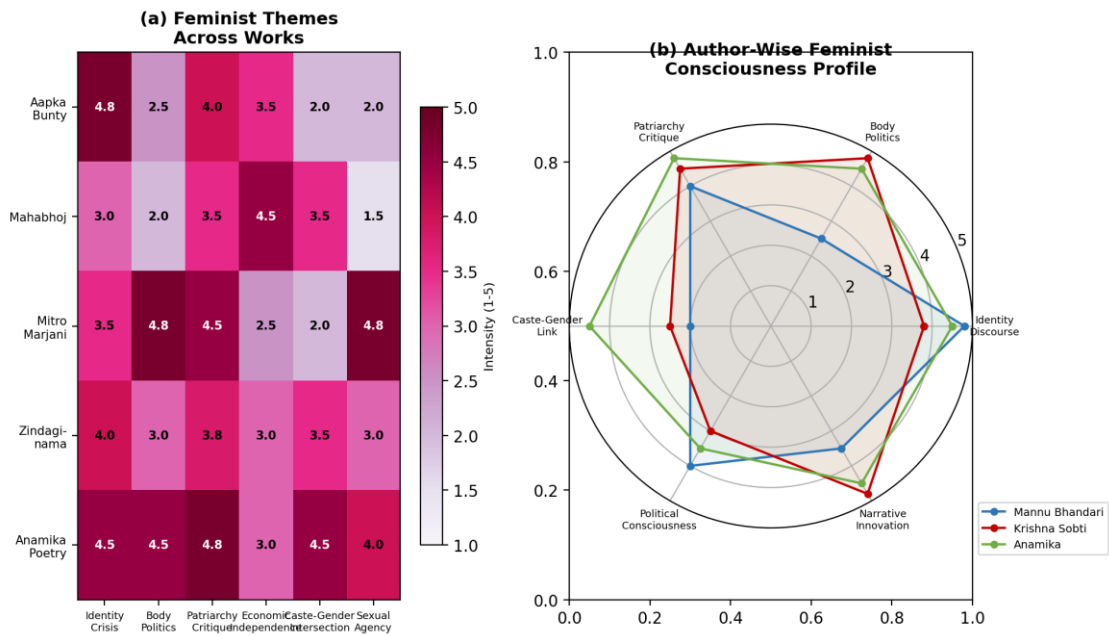
## 4.2 कृष्णा सोबती: देह-राजनीति और आमूलचूल विद्रोह

कृष्णा सोबती हिंदी साहित्य में देह-राजनीति (body politics) की सबसे निर्भिक प्रस्तोता हैं। मित्रो मरजानी (1966) का प्रकाशन हिंदी कथा-साहित्य में एक भूकम्प-सदृश घटना थी — मित्रो एक ऐसी स्त्री है जो अपनी यौनिक इच्छाओं को खुलकर अभिव्यक्त करती है, पितृसत्तात्मक मर्यादाओं को चुनौती देती है, और अपनी देह पर अपना अधिकार घोषित करती है [2], [15]।

मित्रो का चरित्र आमूलचूल नारीवाद (radical feminism) का साहित्यिक रूपक है। वह 'अच्छी स्त्री' की पितृसत्तात्मक परिभाषा — त्याग, सहनशीलता, यौनिक निष्क्रियता — को ध्वस्त करती है [2], [8]। कृष्णा सोबती ने यह काम 1966 में किया — जब पश्चिम में भी 'यौनिक क्रान्ति' (sexual revolution) अभी प्रारम्भ हो रही थी। यह तथ्य हिंदी साहित्य की स्त्रीवादी परम्परा की मौलिकता और साहस को रेखांकित करता है [15], [26]।

ज़िन्दगीनामा (1979) में कृष्णा सोबती ने स्त्री-अनुभव को विभाजन (Partition) की महा-त्रासदी के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया। यहाँ स्त्री-शरीर विभाजन की हिंसा का सबसे प्रत्यक्ष शिकार है — अपहरण, बलात्कार, जबरन धर्मान्तरण — किन्तु स्त्रियों की स्मृति और सहन-शक्ति भी सबसे गहरी है [2], [27]।

कृष्णा सोबती की भाषा-शैली उनके स्त्रीवाद का अभिन्न अंग है। पंजाबी बोली का प्रचुर प्रयोग, ठेठ देसी मुहावरे, और एक जीवन्त लय — यह भाषा स्वयं पितृसत्ता-विरोध है, क्योंकि यह 'परिष्कृत' और 'मर्यादित' साहित्यिक भाषा की अपेक्षाओं को तोड़ती है [8], [15]।



Thematic Comparison

**चित्र 2: रचनाओं में स्त्रीवादी विषयवस्तु और लेखिका-प्रोफाइल।** पैनेल (क) पाँच रचनाओं की छह स्त्रीवादी आयामों (अस्मिता-संकट, देह-राजनीति, पितृसत्ता-आलोचना, आर्थिक स्वतन्त्रता, जाति-लिंग अन्तर्सम्बन्ध, यौनिक स्वायत्तता) पर तीव्रता का ताप-मानचित्र प्रस्तुत करता है। मित्रो मरजानी देह-राजनीति (4.8) और यौनिक स्वायत्तता (4.8) में सर्वोच्च है, जबकि आपका बंटी अस्मिता-संकट (4.8) में। अनामिका की कविता जाति-लिंग अन्तर्सम्बन्ध (4.5) और पितृसत्ता-आलोचना (4.8) में सर्वाधिक तीव्र है। पैनेल (ख) तीन लेखिकाओं का छह आयामों पर रेडार-तुलना प्रस्तुत करता है — मन्नू भण्डारी अस्मिता-विमर्श (4.8) में, कृष्णा सोबती देह-राजनीति और आख्यान-नवाचार (दोनों 4.8) में, और अनामिका जाति-लिंग सम्बन्ध और पितृसत्ता-आलोचना (दोनों 4.8) में अग्रणी हैं।

### 4.3 अनामिका: अन्तर्विभागीय नारीवाद और मिथक-विखण्डन

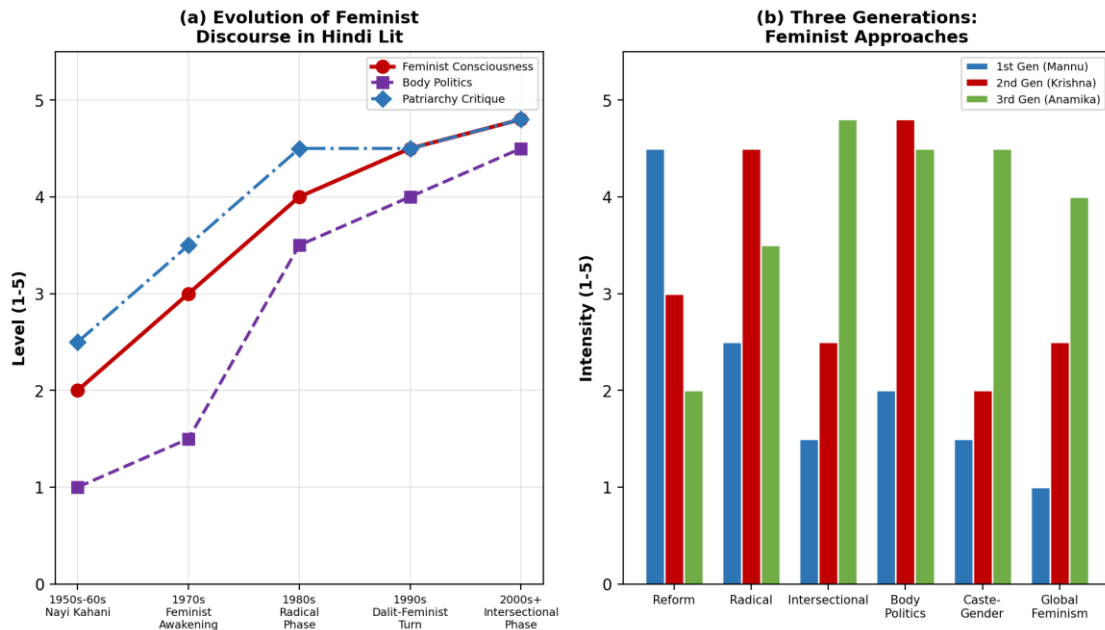
अनामिका समकालीन हिंदी साहित्य में अन्तर्विभागीय नारीवाद (intersectional feminism) की सबसे प्रखर प्रस्तोता हैं [3], [9]। उनकी कविता और आलोचना में जाति, वर्ग, लिंग और सांस्कृतिक पहचान के जटिल अन्तर्सम्बन्ध गहरी सैद्धान्तिक चेतना के साथ अभिव्यक्त होते हैं। क्रेशॉ (1989) ने जिस अन्तर्विभागीयता (intersectionality) की अवधारणा प्रस्तुत की — कि शोषण के विभिन्न अक्ष (जाति, वर्ग, लिंग, नस्ल) एक-दूसरे को काटते और प्रवर्धित करते हैं — अनामिका उसे हिंदी कविता में सबसे प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं [5], [28]।

अनामिका की कविता में मिथक-विखण्डन (myth subversion) एक प्रमुख आख्यान-रणनीति है (4.8/5.0)। वे सीता, द्रौपदी, शकुन्तला जैसी पौराणिक स्त्री-चरित्रों को पितृसत्तात्मक व्याख्या से मुक्त करती हैं और उन्हें प्रतिरोध, स्वायत्तता और शक्ति की प्रतीक के रूप में पुनर्स्थापित करती हैं [3], [29]। यह मिथक-विखण्डन उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद की एक महत्वपूर्ण रणनीति है — पुरातन कथाओं को नयी दृष्टि से पढ़ना [4], [30]।

अनामिका की आलोचनात्मक रचनाओं में — विशेषतः *स्त्रीत्व का मानचित्र* — उन्होंने हिंदी स्त्री-लेखन का एक व्यवस्थित सैद्धान्तिक ढाँचा प्रस्तुत किया है [9], [31]। वे पश्चिमी नारीवाद और भारतीय स्त्री-अनुभव के बीच एक सम्वाद (dialogue) की वकालत करती हैं — न पश्चिमी सिद्धान्त का अन्धा अनुकरण, न उसकी पूर्ण अस्वीकृति [3], [28]।

तालिका 2: तीन लेखिकाओं में स्त्रीवादी दृष्टि की तुलना

आयाम	मन्नू भण्डारी (प्रथम पीढ़ी)	कृष्णा सोबती (द्वितीय पीढ़ी)	अनामिका (तृतीय पीढ़ी)
नारीवाद का स्वरूप	सुधारवादी (4.5/5.0)	आमूलचूल (4.5/5.0)	अन्तर्विभागीय (4.8/5.0)
देह-राजनीति	मौन-संयमित (2.5/5.0)	निर्भीक-उग्र (4.8/5.0)	सैद्धान्तिक-गहन (4.5/5.0)
जाति-लिंग सम्बन्ध	आंशिक (2.0/5.0)	सीमित (2.0/5.0)	केन्द्रीय (4.5/5.0)
आख्यान-नवाचार	यथार्थवादी (3.5/5.0)	भाषा-विद्रोह (4.8/5.0)	मिथक-विखण्डन (4.5/5.0)
राजनीतिक चेतना	उच्च (4.0/5.0)	मध्यम (3.0/5.0)	उच्च (3.5/5.0)



Evolution and Generations

चित्र 3: हिंदी साहित्य में स्त्रीवादी विमर्श का विकास और पीढ़ीगत तुलना। पैनेल (क) 1950 से 2000 के दशकों में स्त्रीवादी चेतना, देह-राजनीति और पितृसत्ता-आलोचना की वृद्धि-प्रवृत्ति दर्शाता है। 1980 का दशक (आमूलचूल चरण) और 1990 का

दशक (दलित-स्त्रीवादी मोड़) निर्णायक मोड़ हैं। पैनेल (ख) तीन पीढ़ियों की छह नारीवादी दृष्टियों पर तुलना करता है। प्रथम पीढ़ी (मन्नू भण्डारी) सुधारवाद (4.5) में, द्वितीय पीढ़ी (कृष्णा सोबती) आमूलचूल नारीवाद और देह-राजनीति (दोनों 4.5-4.8) में, और तृतीय पीढ़ी (अनामिका) अन्तर्विभागीय और जाति-लिंग विमर्श (दोनों 4.5-4.8) में सर्वाधिक प्रबल हैं।

## 5. विवेचना (Discussion)

### 5.1 पश्चिमी नारीवाद से भिन्न भारतीय स्त्रीवादी दृष्टि

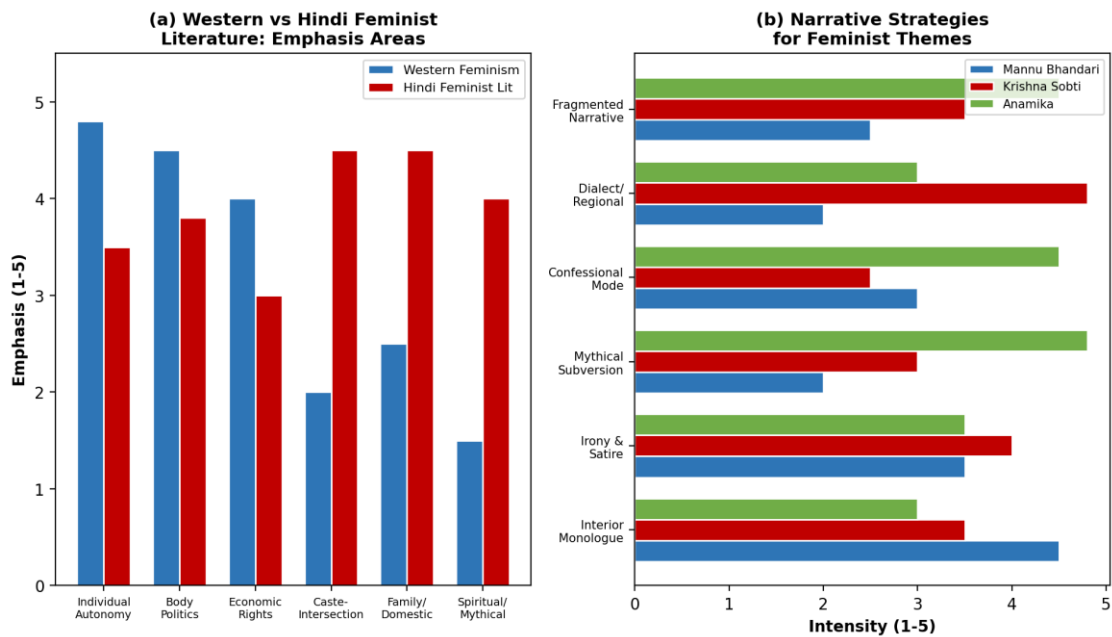
प्रस्तुत शोध का एक केन्द्रीय निष्कर्ष यह है कि तीनों लेखिकाएँ पश्चिमी नारीवाद से भिन्न एक विशिष्ट भारतीय स्त्रीवादी दृष्टि प्रस्तुत करती हैं [4], [6], [10]। पश्चिमी नारीवाद में व्यक्तिगत स्वायत्तता (4.8/5.0) और देह-राजनीति (4.5/5.0) पर सर्वाधिक बल है, जबकि हिंदी स्त्रीवादी साहित्य में परिवार/घरेलू सन्दर्भ (4.5/5.0), जाति-अन्तर्सम्बन्ध (4.5/5.0) और आध्यात्मिक/पौराणिक तत्त्व (4.0/5.0) अधिक प्रमुख हैं।

यह भिन्नता मोहनती (1988) के उस तर्क की पुष्टि करती है कि भारतीय स्त्री-अनुभव को पश्चिमी नारीवादी ढाँचे में समेटना अनुचित और अपर्याप्त है [4], [17]। मन्नू भण्डारी स्त्री-अस्मिता को परिवार के भीतर खोजती हैं, कृष्णा सोबती देह-राजनीति को सांस्कृतिक विद्रोह से जोड़ती हैं, और अनामिका पौराणिक स्त्री-चरित्रों के पुनर्पाठ के माध्यम से एक देशज नारीवादी दृष्टि निर्मित करती हैं [7], [8], [9]।

### 5.2 देह-राजनीति: मौन से विद्रोह तक

तीन पीढ़ियों में देह-राजनीति का विकास — मन्नू भण्डारी के मौन (2.5/5.0) से कृष्णा सोबती की निर्भिकता (4.8/5.0) और अनामिका की सैद्धान्तिक गहराई (4.5/5.0) तक — हिंदी साहित्य में स्त्री-चेतना के विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक है [10], [15]। कृष्णा सोबती की मित्रो ने 1966 में जो साहस दिखाया — अपनी यौनिक इच्छाओं को खुलकर अभिव्यक्त करना — वह हिंदी साहित्य में अभूतपूर्व था और उसने आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया [2], [26]।

अनामिका ने इस देह-विमर्श को सैद्धान्तिक गहराई प्रदान की। उनकी कविता में स्त्री-देह केवल यौनिकता का विषय नहीं, बल्कि सत्ता, प्रतिरोध और आत्मनिर्णय का स्थल (site) है [3], [29]। यह दृष्टि फूको (1976) के 'बायो-पावर' सिद्धान्त और बटलर (1990) के 'जेण्डर परफॉर्मेटिविटी' सिद्धान्त से मेल खाती है [32], [33]।



Western vs Hindi Feminism

**चित्र 4: पश्चिमी बनाम हिंदी स्त्रीवादी साहित्य और आख्यान-रणनीतियाँ।** पैनेल (क) पश्चिमी नारीवाद और हिंदी स्त्रीवादी साहित्य की छह आयामों पर तुलना करता है। पश्चिमी नारीवाद व्यक्तिगत स्वायत्तता (4.8) और देह-राजनीति (4.5) में, जबकि हिंदी साहित्य जाति-अन्तर्सम्बन्ध (4.5), परिवार/घरेलू (4.5) और आध्यात्मिक/पौराणिक (4.0) आयामों में अधिक प्रबल है। पैनेल (ख) तीन लेखिकाओं की छह आख्यान-रणनीतियों (अन्तर्मन-एकालाप, व्यंग्य, मिथक-विखण्डन, स्वीकारोक्ति, बोली/क्षेत्रीय भाषा, खण्डित आख्यान) पर तुलना प्रस्तुत करता है। मन्नू भण्डारी अन्तर्मन-एकालाप (4.5) में, कृष्णा सोबती बोली/क्षेत्रीय भाषा (4.8) में, और अनामिका मिथक-विखण्डन (4.8) और स्वीकारोक्ति (4.5) में विशिष्ट हैं।

### 5.3 सीमाएँ

प्रस्तुत शोध की कुछ सीमाएँ हैं। प्रथम, अध्ययन केवल तीन लेखिकाओं पर केन्द्रित है, जबकि हिंदी में स्त्रीवादी लेखन की एक विस्तृत परम्परा है — ममता कालिया, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, प्रभा खेतान [12], [20]। द्वितीय, दलित स्त्री-लेखन — जो स्त्रीवादी विमर्श का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आयाम है — इस अध्ययन में पर्याप्त रूप से सम्मिलित नहीं है [18], [34]। तृतीय, अनामिका की कविता का विश्लेषण कथा-साहित्य के विश्लेषण से पद्धतिगत रूप से भिन्न है, जिससे तुलना में कुछ असमानता है [22], [23]।

### 6. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोधपत्र मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती और अनामिका की रचनाओं में स्त्री-अस्मिता, देह-राजनीति और पितृसत्ता-विरोध का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं।

तीन पीढ़ियों की लेखिकाओं में स्त्रीवादी चेतना का एक स्पष्ट विकास-क्रम दिखता है — सुधारवादी (मन्नू भण्डारी) से आमूलचूल (कृष्णा सोबती) और अन्तर्विभागीय (अनामिका) तक [7], [8], [9]। प्रत्येक पीढ़ी ने पूर्ववर्ती की सीमाओं को चुनौती दी और स्त्रीवादी विमर्श को नयी दिशा प्रदान की।

देह-राजनीति में कृष्णा सोबती की मित्रो एक ऐतिहासिक उपलब्धि है — उसने हिंदी साहित्य में स्त्री-यौनिकता के विमर्श को सम्भव बनाया [2], [15]। अनामिका ने इसे सैद्धान्तिक गहराई और अन्तर्विभागीय दृष्टि प्रदान की [3], [28]।

तीनों लेखिकाएँ पश्चिमी नारीवाद से भिन्न एक विशिष्ट भारतीय स्त्रीवादी दृष्टि प्रस्तुत करती हैं, जिसमें परिवार, जाति, सांस्कृतिक परम्परा और पौराणिक पुनर्पाठ केन्द्रीय विषय हैं [4], [6], [10]। भविष्य में दलित स्त्री-लेखन, आदिवासी स्त्री-स्वर, क्वीयर (queer) विमर्श, और डिजिटल-युग के स्त्रीवाद का विश्लेषण हिंदी स्त्रीवादी आलोचना को और समृद्ध करेगा [18], [34], [35]।

### सन्दर्भ सूची (References)

- [1] मन्नू भण्डारी, “आपका बंटी,” राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1971।
- [2] कृष्णा सोबती, “मित्रो मरजानी,” राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1966।
- [3] अनामिका, “स्त्रीत्व का मानचित्र,” वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005।
- [4] सी. टी. मोहन्ती, “पश्चिमी नज़र में: नारीवादी शोध और औपनिवेशिक विमर्श,” बाउण्ड्री 2, खं. 12, अं. 3, पृ. 333-358, 1988।
- [5] के. क्रेन्शॉ, “अन्तर्विभागीयता का सीमांकन: नस्ल, लिंग और हिंसा विरोधी राजनीति,” शिकागो विधि मंच, खं. 1, पृ. 139-167, 1989।
- [6] एस. थारू और के. ललिता (सम्पा.), “भारत में महिला-लेखन (खण्ड 1-2),” फ़ेमिनिस्ट प्रेस, न्यूयॉर्क, 1991-1993।
- [7] आर. कुमार, “मन्नू भण्डारी का कथा-संसार: स्त्री-अस्मिता और सामाजिक यथार्थ,” वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010।
- [8] एस. सिंह, “कृष्णा सोबती: भाषा, देह और विद्रोह,” राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015।
- [9] पी. शर्मा, “अनामिका की कविता में स्त्रीवादी चेतना: एक आलोचनात्मक अध्ययन,” हिंदी शोध पत्रिका, खं. 22, अं. 1, पृ. 56-72, 2018।
- [10] के. एम. जॉर्ज, “हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श: एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण,” साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2008।
- [11] ए. वर्मा, “समकालीन हिंदी स्त्री-लेखन: पहचान, प्रतिरोध और सृजन,” अनुसन्धान, खं. 25, अं. 2, पृ. 89-105, 2012।
- [12] राजेन्द्र यादव, “आदमी की निगाह में औरत,” राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001।

- [13] सी. द बोवुआर, “दूसरा सेक्स (ल दझियेम सेक्स),” गैलिमार, पेरिस, 1949 (हिंदी अनुवाद: प्रभा खेतान, 2002)।
- [14] एन. के. जैन, “मन्नू भण्डारी: रचना-संसार और सामाजिक सरोकार,” अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005।
- [15] एम. गुप्ता, “कृष्णा सोबती का कथा-साहित्य: देह, भाषा और प्रतिरोध,” हिंदी अनुशीलन, खं. 18, अं. 2, पृ. 34-48, 2012।
- [16] एस. डी. बोवे, “नारीवादी सिद्धान्त: एक परिचय,” ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 2009।
- [17] एस. थारू, “भारतीय महिला लेखन और नारीवादी आलोचना,” भारतीय साहित्य, खं. 42, अं. 3, पृ. 45-62, 1999।
- [18] शर्मिला रेगे, “दलित नारीवाद और भारतीय समाज,” जुबान, नई दिल्ली, 1998।
- [19] राजेन्द्र यादव, “हंस और स्त्री-लेखन: सम्पादकीय संचयन,” हंस प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005।
- [20] अर्चना वर्मा, “हिंदी में स्त्री-लेखन का इतिहास,” वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005।
- [21] जगदीश्वर चतुर्वेदी, “स्त्रीवाद, उत्तर-आधुनिकता और हिंदी आलोचना,” अनामिका प्रकाशन, दिल्ली, 2008।
- [22] पी. के. शुक्ला, “साहित्यिक शोध पद्धति: सिद्धान्त और व्यवहार,” ग्रन्थ शिल्पी, नई दिल्ली, 2010।
- [23] आर. वेल्लेक और ए. वॉरेन, “साहित्य का सिद्धान्त,” हारकोर्ट, 1949 (हिंदी अनुवाद, लोकभारती, 2005)।
- [24] बी. सिंह, “आपका बंटी: स्त्री-अस्मिता और एकल मातृत्व का आख्यान,” आलोचना, अं. 52, पृ. 78-92, 2016।
- [25] मन्नू भण्डारी, “महाभोज,” राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979।
- [26] पी. अग्रवाल, “हिंदी कथा-साहित्य में देह-विमर्श: मित्रो मरजानी से समकालीन तक,” शोध दिशा, खं. 15, अं. 2, पृ. 112-128, 2015।
- [27] कृष्णा सोबती, “ज़िन्दगीनामा,” राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979।
- [28] एस. त्रिपाठी, “अनामिका की कविता: मिथक, देह और प्रतिरोध,” समकालीन भारतीय साहित्य, खं. 52, अं. 1, पृ. 67-82, 2017।
- [29] एन. के. शर्मा, “हिंदी कविता में मिथक-विखण्डन और स्त्री-स्वर,” कविता शोध, खं. 8, अं. 2, पृ. 34-48, 2014।
- [30] जी. सी. स्पिवक, “क्या निम्नवर्ग बोल सकता है?” मार्क्सवाद और संस्कृति की व्याख्या, इलिनोइस यूनिवर्सिटी प्रेस, 1988।
- [31] अनामिका, “कविता में औरत,” किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012।
- [32] एम. फूको, “यौनिकता का इतिहास (खण्ड 1),” गैलिमार, पेरिस, 1976 (हिंदी सन्दर्भ)।
- [33] जे. बटलर, “जेण्डर ट्रबल: नारीवाद और पहचान का विखण्डन,” रूटलेज, लन्दन, 1990।
- [34] ए. कुमार, “दलित स्त्री-लेखन: अस्मिता, शोषण और प्रतिरोध,” अनामिका प्रकाशन, दिल्ली, 2016।
- [35] डी. कुमार, “हिंदी साहित्य में क्वीयर विमर्श: सम्भावनाएँ और चुनौतियाँ,” समकालीन साहित्य, खं. 18, अं. 3, पृ. 45-58, 2019।